

मुर्गियों में होने वाले

प्रमुख रोग, उनके लक्षण एवं बचाव



प्रकाशक

डॉ० सीमा कुमारी, वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान, कृ.वि.के. हरनौत, नालन्दा

आलेख

डॉ० विद्या शंकर सिन्हा, वि.व.वि. (पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान)

डॉ० ज्योति सिन्हा, वि.व.वि. (गृह विज्ञान)

डॉ० उमेश नारायण उमेश, वि.व.वि. (मृदा विज्ञान)

श्रीमति कुमारी विभा रानी, वि.व.वि. (उद्यान विज्ञान)

मुर्गियों में होने वाले प्रमुख रोग उनके लक्षण एवं बचाव

सफल मुर्गी पालन के लिए मुर्गियों में होने वाले रोगों के बारे में जानकारी अति आवश्यक है क्योंकि इससे मुर्गी पालक को अत्यधिक आर्थिक हानि हो सकती है। रोग से ग्रसित मुर्गी में निम्न लक्षण परिलक्षित होते हैं जो कि स्वस्थ मुर्गी से अलग होते हैं :-

- बीमार मुर्गी एक स्थान पर बैठ जाती है तथा घूमना फिरना बन्द कर देती है।
- खाना-पीना कम या बिल्कुल बन्द कर देती है।
- पंख ढीले पड़ जाते हैं तथा मुर्गी थरथराती है।
- मुर्गी को पेचिस हो जाती है।
- बीमारी मुर्गी का वजन व अण्डा उत्पादन कम हो जाता है।
- आंखों की चमक कम हो जाती है तथा कभी कभी आंखें खराब हो जाती है।
- रोग की प्रकोपता बढ़ने पर मृत्युदर बढ़ जाती है।

मुर्गियों में पाये जाने वाले रोगों को कारक जीवों के आधार पर निम्न प्रकार वर्गीकृत किया गया है।

जीवाणु जनित रोग

मुर्गी गृह या मुर्गियों में जीवाणुओं की उपस्थिति एक आम बात है। जीवाणु प्रायः मुर्गी से अण्डे के माध्यम से चूजों में तथा मुर्गी के मल-मूत्र से अण्डे में स्थानान्तरित होत हैं। मुर्गी घर में जीवाणु पानी-दाना हवा बिछावन व मुर्गी घर में प्रयोग होने वाले उपकरण तथा काम करने वाले व्यक्ति के जरिए चूजों या मुर्गी में आ सकते हैं।



जीवाणुओं से होने वाली प्रमुख बीमारियाँ निम्न प्रकार की हैं।

रोग :- ओम्फालाइटिस

लक्षण :- 1-4 दिन की आयु के चूजों में होती है। चूजों का पेट फूल जाता है तथा पेट में अन्दर काला एवं पीला या नीला पानी जमा हो जाता है। चूजों का यकृत गुर्दे फेफड़े या हृदय खराब हो जाते हैं तथा मृत्युदर बढ़ जाती है।

बचाव एवं उपचार :- बचाव के लिए चूजों को पहले 5 दिन तक डॉक्टर की सलाह पर पैलविन/एनरोसिन/फ्लोक्सीडिन/नियोडाक्स /कोलीस्टीन आदि इवाएँ तथा इलेक्ट्रोलाइट्स को पानी में घोलकर देना चाहिए।

रोग :- पुल्लोरम

लक्षण :- चूजे व वयस्क मुर्गियों में पायी जाती है। चूजे बूडर के नीचे एकत्रित होते हैं। सफेद या हरे रंग की पेचिस होती है तथा सांस लेने में कठिनाई होती है। 7-10 दिन के अन्दर चूजे मरने लगते हैं। मुर्गी दाना खाना कम कर देती है तथा पेचिस का शिकार हो जाती है, फलतः अण्डा उत्पादन कम हो जाता है।

बचाव एवं उपचार :- पुल्लोरम रहित फार्म या हैचरी से ही चूजे खरीदने चाहिए। मुर्गियों को स्वस्थ मुर्गियों से अलग कर देना चाहिए। कुक्कुट आवास हवादार होने तथा बिछावन पर विसंक्रमणकारी घोल का छिड़काव करना चाहिए। रोग के उपचार के लिए स्लफोनामाइड्स, एनरोफ्लोक्सोसिन, सिपरोफ्लोक्सोसिन का उपयोग

करना चाहिए।

रोग :- फाल टाइफाइड (मियादी बुखार)

लक्षण :- यह रोग वयस्क मुर्गियों में होता है मुर्गियाँ दाना खाना कम कर देती हैं पंख असंतुलित हो जाते हैं कलगी सूख जाती है खून की कमी हो जाती है मुर्गी सूख कर मर आती है।

बचाव एवं उपचार :- बीमार पक्षियों को अलग रखना चाहिए कुक्कुट आवास में संवातन की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। उपचार के लिए सल्फोनामाइड्स / एनरोफ्लोक्सोसिन / फैप्लोक्सोसिन / सिप्रोफ्लोक्सोसिन / टेरा माइसिन / माइकोसल आदि दवाओं को पानी में घोल बनाकर पिलाना चाहिए।

रोग :- फाउल पैरा टायफाइड

लक्षण :- यह रोग दो सप्ताह तक की उम्र के चूजों में होता है। बीमार चूजे सिर को नीच के झुकाये खड़े रहते हैं। दाना खाना कम कर देते हैं पेचिस हो जाती है तथा लंगडा कर चलते हैं। चूजों की आंत में सूजन आ जाती तथा 10 से 20 प्रतिशत तक चूजे मर जाते हैं।

बचाव एवं उपचार :- कुक्कुट आवास में अन्य पक्षियों चूहों तथा आगंतुकों का प्रवेश बन्द कर देना चाहिए इसके उपचार के लिए भी फाउल टायफाइड में प्रयोग की गई दवाओं का प्रयोग किया जाता है।



रोग :- कुक्कुट हैजा

लक्षण :- मुर्गी दाना कम खाती है, तेजी से सांस लेती है मुंह से लार बहती है कलगी तथा गलचर्म में सूजन व नीलापन आ जाता है पेचिस होती है तथा 10-20 प्रतिशत मुर्गियाँ मर जाती है।

बचाव एवं उपचार :- कुक्कुट आवास में चूहे व मक्खी पर पूर्ण नियंत्रण होना चाहिए। दाने-पानी के बर्तन साफ व बिछावन स्वच्छ होनी चाहिए। सल्फानोमाइड्स / टेट्रासाइक्लीनमाइकोसल / एरिथ्रोसिन आदि दवाओं को पानी में घोलकर पिलाना चाहिए बीमारी का प्रभाव तीव्र होने पर मुर्गियों को जेन्टामाइसिन एरिथ्रोमाइसिन लिंकोसै विटन / टेट्रासाइक्लिन आदि दवाओं का इन्जेक्शन देना चाहिए।

रोग :- जुकाम (कोराइजा)

लक्षण :- मुर्गी की आंख चेहरे व कलगी में सूजन आती है सांस लेने में कठिनाई होती है व कभी कभी छींक आती है अण्डा उत्पादन कम हो जाता है तथा बीमार मुर्गियाँ मर जाती है।

बचाव एवं उपचार :- कुक्कुट आवास हवादार हो अमोनिया गैस एकत्र नहीं होनी चाहिए मुर्गियाँ प्रत्याबल से मुक्त होनी चाहिए बीमार मुर्गियों को अलग कर देना चाहिए। सल्फानोमाइड्स / एरिथ्रोमाइसिन / लिंकोसैविटन / टेट्रासाइक्लिन / इलोसिन तथा माइकोसल दवाइयों का घोल बनाकर पानी में पिलाना चाहिए।

रोग :- पुराना जुकाम (सी०आर० डी०)

लक्षण :- वयस्क पक्षियों में सांस लेने में परेशानी होती है नाक से पानी आता है व खांसी भी आती है छिकते हुए व सांस लेते समय आवाज सुनाई पड़ती है दाना कम खाती है फलस्वरूप अण्डा उत्पादन घट जाता है फेफड़े व वायु कोष से पीले रंग के

दाने पाये जाते हैं।

बचाव एवं उपचार :- पुराना जुकाम रहित फार्म या हैचरी से ही चूजे प्राप्त करने चाहिए। बीमार मुर्गी की पहचान करके स्वस्थ पक्षियों से अलग कर देना चाहिए। लिंगोस्पैक्टिन टाइलोसिन टाइमोटिन/एरिथ्रोमाइसिन आदि दवाओं को पानी में घोलकर पिलाना चाहिए।

रोग :- किसनी बुखार

लक्षण :- यह हर उम्र की मुर्गियों में होता है बीमार मुर्गी पड़ी रहती है तथा चेहरा पीला पड़ जाता है शरीर का तापमान बढ़ जाता है मुर्गी दाना खाना बंद कर देती है तथा पानी ज्यादा पीती है तथा रक्त की कमी हो जाती है अंततः मुर्गी मर जाती है।

बचाव एवं उपचार :- रोकथाम के लिए मुर्गीघर में किलनियों अंकुश लगाना चाहिए। बीमारी के इलाज हेतु टेट्रासाइक्लीन पैलबिन एनरोक्सोसिन एम्पीसीलीन, मोक्सीलीन आदि दवाओं को पानी में घोलकर पिलाना चाहिए। बीमारी का प्रभाव तीव्र होने पर मुर्गियों को जेन्टामाइसिन टेरासाइसिन पेनीसिलीन/स्ट्रेप्टोमाइसिन आदि दवाओं का इन्जेक्शन देना चाहिए।

विषाणु जनित रोग

मुर्गियों में विषाणु जनित रोग आर्थिक दृष्टि से अधिक हानिकारक होते हैं। क्योंकि इन बीमारियों का इलाज उपलब्ध नहीं है। विषाणुओं द्वारा रोगों के लिए एण्टीबायोटिक्स लाभदायक नहीं होती हैं अतः इन रोगों का टीकाकरण एवं जैव सुरक्षा प्रबन्ध के द्वारा ही नियंत्रित किया जा सकता है। विषाणु जनित रोगों से बचाव एवं रोकथाम के लिए पक्षियों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने तथा रोग ग्रसित मुर्गियों को अन्य संक्रमणों से बचाने हेतु दवाएं दी जाती हैं। मुर्गियों में विषाणुओं से होने वाले कुछ महत्वपूर्ण रोगों का वर्णन निम्नलिखित है।

रोग:- रानी खेल (आर0 डी0)

लक्षण :- यह बीमारी हर उम्र की मुर्गी को प्रभावित करता है, इस बीमारी के होने पर पक्षी एक जगह एकत्रित हो जाते हैं खाना-पीना बन्द कर देते हैं सफेद व हरे रंग की पेचिश होती है। कुछ खड़े नहीं हो पाते हैं या कुछ की गर्दन टेढ़ी हो जाती है। प्रभावित मुर्गियाँ मर जाती हैं पूरा कुक्कुट समूह नष्ट हो जाता है। यह एक महामारी का रूप धारण कर लेती है।

रोकथाम एवं उपचार :- बीमारी होने पर तुरन्त वैक्सीन की 1-1 बूंद हर मुर्गी की नाक व आँख में देना चाहिए। पानी में एण्टीबायोटिक्स तथा मल्टीविटामिन का घोल पिलाना चाहिए। मरी हुई मुर्गी को जलाकर या दफनाकर पूर्णतया नष्ट कर देना चाहिए। बीमारी की रोकथाम के लिए आर0 डी0 टीकाकरण करना चाहिए।



रोग :- मैरेक्स (आर0 डी0)

लक्षण :- यह बीमारी ज्यादातर 8-16 सप्ताह की उम्र वाली मुर्गियों में होती है। इस बीमारी के कारण मुर्गियों में लकबा हो जाता है व गर्दन टेढ़ी हो जाती है। मुर्गी एक पांव आगे व एक पीछे करके पड़ी रहती है। जिससे वे दाना-पानी ठीक से नहीं खा पाती हैं। फलस्वरूप मुर्गी मर जाती है। कुछ मुर्गियाँ अंधी हो जाती हैं मरी हुई

मुर्गियों के जिगर मुर्दा आदि में गाठ (ट्यूमर) हो जाती है।

रोकथाम एवं उपचार :- बीमारी होने पर पानी में मल्टी विटामिन देने से मुर्गियों को राहत मिलती है लेकिन रोकथाम के लिए एक दिन की उम्र वाले चूजों को टीका देना आवश्यक है। प्रभावित मुर्गियों के गिरे हुए पंखों को जलाकर या दफनाकर नष्ट कर देना चाहिए।

रोग :- गम्बोरो (आई० बी०डी०)

लक्षण :- इस बीमारी में मुर्गी व चूजे आवास के एक कोने में सिर झुकाए खड़े रहते हैं चूजे थरथराते हैं यह बीमारी 3-12 सप्ताह तक के पक्षियों में होती है। सफेद व पीले रंग की पेचिस होती है दाना कम खाते हैं तथा 20-30 प्रतिशत तक बीमार मुर्गियां मर जाती है। इस बीमारी के कारण पक्षियों की रोग प्रतिरोधक क्षमता में गिरावट आती है। जिसके कारण मुर्गियों अन्य रोगों की शिकार हो जाती है तथा मृत्युदर बढ़ जाती है और टीकाकरण का फायदा मुर्गियों को नहीं हो पाता।



रोकथाम एवं उपचार :- विटामिन आदि दवाइयों को पानी में मिलाकर देना चाहिए। रोकथाम के लिए टीकाकरण अवश्य कराये। मुर्गी आवास में मच्छर का नियंत्रण अति आवश्यक है।

रोग :- लीची रोग

लक्षण :- यह बीमारी 3 से 10 सप्ताह तक के उम्र में होती है। इस बीमारी के कारण चूजे खाना-पीना बन्द कर देते हैं तथा उन्हें सफेद हरे या पीले रंग की पेचिस हो जाती है ग्रसित चूजे पंख ढीले करके खड़े रहते हैं तथा 24 घंटे के अन्दर मर जाते हैं। इस बीमारी के कारण 70 से 80 प्रतिशत तक मृत्युदर हो जाती है मरे हुए चूजों के हृदय के उपर पानी जमा हो जाता है तथा कभी कभी मोटा सफेद आवरण पाया जाता है जो लीची जैसा दिखाई देता है।

रोकथाम एवं उपचार :- इस बीमारी के होने पर मुर्गियों को मल्टीविटामिन जीट्रैस आदि का घोल बनाकर पानी में पिलाना चाहिए। रोकथाम के लिए अभी भी सही टीका उपलब्ध नहीं है लेकिन चूजों की रोग प्रतिरोधक क्षमता न घटने पाये इसका ध्यान रखना जरूरी है। चूजों को गम्बोरो से बचाकर इस बीमारी पर अंकुश लगाया जा सकता है।

रोग :- चेचक (फाउल पॉक्स)

लक्षण :- यह हर उम्र की मुर्गियों में पायी जाती है परन्तु 8 सप्ताह से अधिक उम्र की मुर्गियों में सबसे अधिक होती है। इस बीमारी में मुर्गियों की कलगी गलचर्म चेहरा व पांव आदि पंख विहीन अंगों पर फुंसी जैसे दाने दिखते हैं। 2 से 4 दिन के बाद फुंसी घाव का रूप ले लेती है तथा 8 से 10 दिन बाद घाव सूखकर पपड़ी बन जाता है मुर्गी दाना कम खाती है फल स्वरूप अण्डा उत्पादन घट जाता है शारीरिक वजन कम हो जाता है। मृत्युदर कम होती है लेकिन जब यह दाने मुंह के अन्दर होते हैं तब मुर्गियों को खाने-पीने में कठिनाई होती है जिस कारण मृत्युदर बढ़ जाती है। यह बीमारी अण्डे देने वाली मुर्गियों में होती है।

रोकथाम एवं उपचार :- इस बीमारी से बचाव के लिए टीकाकरण करना चाहिए।

रोग :- ई०डी० से 0-76

लक्षण :- इस बीमारी के कारण मुर्गियों में अण्डा उत्पादन अचानक घट जाता है

कुछ मुर्गियों में अण्डा देना बिल्कुल बन्द हो जाता है तथा कुछ मुर्गियों पतले व बिना छिलके वाला अण्डा देती है। बीमारी के 3 से 4 सप्ताह के बाद अण्डे की पैदावार में थोड़ा सा सुधार होता है। किसी किसी मुर्गी में दस्त भी आते हैं और इसके अलावा कोई अन्य लक्षण दिखायी नहीं देता।

रोकथाम एवं उपचार :- प्रभावित मुर्गियों को पानी में मल्टी विटामिन कैल्शियम फास्फोरस देना चाहिए। बीमारी की रोकथाम के लिए 18-20 सप्ताह की मुर्गियों को ई.डी.एस.-76 का एक टीका मांसपेशी में देना चाहिए। यह बीमारी अण्डे द्वारा संक्रमित होती है अतः ई.डी.एस.-76 बीमारी मुक्त फार्म या हैचरी से ही चूजे प्राप्त करने चाहिए। मुर्गियों को बत्तखों से दूर रखना चाहिए।

टीकाकरण से संबंधित कुछ आवश्यक जानकारीयों :-

विषाणुओं द्वारा फैलने वाली बीमारियों की रोकथाम के लिए टीकाकरण किया जाता है। टीकाकरण करते समय कुछ बातें ध्यान में रखनी चाहिए जो निम्नलिखित हैं :

1. कुक्कुट पालक को टीकाकरण का उपयुक्त समय, विधि तथा खुराक के बारे में पशु चिकित्साधिकारी से जानकारी लेनी चाहिए।
2. टीके के बारे में सही जानकारीयों, जैसे उसका स्रोत, बैच नं० व नाम आदि नोट करना चाहिए।
3. टीका और उसका घोल बनाने में प्रयोग होने वाले पदार्थ को रेफ्रीजरेटर में रखना चाहिए, रेफ्रीजरेटर न होने की स्थिति में बर्तन में बर्फ डालकर रखा जा सकता है।
4. टीके को निर्माता कम्पनी के निर्देशानुसार प्रयोग करना चाहिए।
5. टीकाकरण सुबह करना चाहिए।
6. टीकाकरण बीमार मुर्गियों में नहीं करना चाहिए।
7. टीकाकरण करने पर कुछ प्रतिक्रिया से बचने के लिए टीकाकरण के तीन दिन पहले तथा तीन दिन बाद तक मल्टीविटामिन का घोल पिलाना चाहिए।

मुर्गियों में टीकाकरण कार्यक्रम

टीके का नाम	पक्षी की उम्र	खुराक	टीकाकरण का ढंग
मैरेक्स वैक्सीन	एक दिन	0.2 मिली०	गर्दन की चमड़ी की नीचे
आर.डी.एफ. स्ट्रेन	1-5 दिन	2 बूंद	1 से 1 बूंद आँख तथा नाक के माध्यम
आई.बी.डी.	14 दिन	2 बूंद	उक्त
इण्टरमीडिएट स्ट्रेन	28 दिन	2 बूंद	उक्त
आर.डी.एफ. स्ट्रेन			
आई.बी.डी.	35 दिन	2 बूंद	उक्त

इण्टरमीडिएट स्ट्रेन

टीके का नाम	पक्षी की उम्र	खुराक	टीकाकरण का ढंग
फाउल पॉक्स	42 दिन	1 बूंद	पंख की चमड़ी में
आर.डी.आर. 2बी	8 से 10 सप्ताह	0-5 मिली0	मांसपेशी में

परजीवी रोग :-

कुछ बाह्य परजीवी जैसे किलनी जुए आदि मुर्गियों के पंख या चमड़ी में पाये जाते हैं तथा पक्षियों का खून चूस कर संक्रमित करते हैं जिसके कारण मुर्गी के शरीर में खुजली होती है तथा अण्डा उत्पादन घट जाता है। मुर्गियों को इन परजीवियों से बचाने के लिए मुर्गी आवास का साफ-सुथरा होना आवश्यक है। परजीवियों की संख्या अधिक होने पर 2 मिली० मैलाथियान / सामाथियान / नुभान / एक्टोमीन आदि कीटनाशक दवाओं को 10 लीटर पानी में मिलाकर मुर्गियों पर तथा उनके आवास में छिड़काव करना चाहिए। इन कीटनाशक दवाइयों को मुर्गियों के दाने-पानी से दूर रखना चाहिए। इस दवा के प्रयोग के बाद मल्टीविटामिन को पानी में मिलाकर पिलाना चाहिए।

अन्तः परजीवी बीमारियाँ :-

अन्तः परजीवी मुर्गियों के अन्दर जैसे आहारनाल श्वासनली व आँख में पाये जाते हैं। इनके द्वारा होने वाली बीमारियाँ निम्न प्रकार हैं।

1. **गोलकृमि** : यह कृमि आंतों में पाया जाता है। इसके कारण मुर्गी कमजोर हो जाती है। तथा रक्तहीनता के लक्षण दिखाई देते हैं। अण्डा उत्पादन कम हो जाता है कृमियों की संख्या अधिक होने पर आंतों में गांठ बन जाती है जिसके कारण मुर्गियों की मृत्यु भी हो सकती है।

उपचार : मुर्गियों को पपराजिन लिमामीजल आदि दवाओं का घोल एक बार पिलाना चाहिए।

2. **फीताकृमि** : बाहर घूम-घूमकर खाने वाले पक्षियों में ज्यादातर पाया जाता है। यह कृमि मध्यवर्ती प्राणी जैसे मक्खी चींटी घोंघा केंचुआ आदि की सहायता से अपना जीवन चक्र पूरा करता है। जब मुर्गी इस मध्यवर्ती प्राणी को अपना आहार बनाती है तब यह कृमि उसके शरीर में चला जाता है। इसके कारण मुर्गियों में कमजोरी रक्तहीनता व अण्डा उत्पादन में कमी जैसे लक्षण दिखते हैं।

उपचार : पशु चिकित्सक की सलाह पर अल्वेन्डाजोल नामक दवा को पानी या आहार में मिलाकर दिया जाना चाहिए।

3. **खूनी पेचिस** : इसको कॉक्सीडियोसिस भी कहते हैं। यह बीमारी ज्यादातर 3-12 सप्ताह की उम्र के पक्षियों में होती है। प्रभावित मुर्गियाँ सिर को नीचे करके कमरे के एक कोने में दूसरी मुर्गियों से दूर खड़ी रहती है पंख ढीले हो जाते हैं तथा खूनी पेचिस होती है। कुछ घंटों के बाद बीमार मुर्गियों की मृत्यु हो जाती है।

उपचार : बीमार मुर्गियों को डाक्टर की सलाह पर एम्प्रोसल एम्प्रोलियम सल्फाक्यूनीजॉलीन नामक दवाई को पानी में मिलाकर 3-5 दिन तक पिलाना

चाहिए। रोकथाम के लिए आवास की बिछावन को सदैव सूखा रखना चाहिए और दाने में सेलाइनोमाइसिन मेडुलामाइसिन आदि कॉक्सीडियोस्टेट मिलाकर नियमित रूप से खिलाना चाहिए। फफूंदी जनित रोग कुक्कुट में फफूंदी मुर्गियों की बिछावन व राशन में प्रयोग होने वाली खली के जरिए शरीर में प्रवेश करती है। कुछ फफूंदी मुर्गियों के राशन में अपने विष छोड़ देती है। इस विषाक्त राशन को खाने पर मुर्गियों बीमार हो जाती है जिसके कारण उनका वजन कम हो जाता है अण्डे की पैदावार घट जाती है तथा प्रभावित मुर्गियों मर जाती हैं।

उपचार : इससे बचने के लिए मुर्गियों को फफूंद रहित दाना खिलाना चाहिए। दाने में एल्युमिनियम सिलिकेट मिलाने से विष की तीव्रता कम हो जाती है। प्रभावित मुर्गियों को मल्टीविटामिन लिक्विड— नोटोन आदि दवाईयाँ पानी में मिलाकर देनी चाहिए। राशन में प्रोटीन की मात्रा बढ़ाने पर विष का प्रभाव किसी हद तक कम किया जा सकता है।

4. **बूडर निमोनिया :** यह बीमारी चूजों में 10 दिन तक की उम्र में पायी जाती है। इसके कारण सांस लेने में कठिनाई होती है तथा चूजे मुँह खोलकर सांस लेते हैं। बूडर के नीचे खड़े रहते हैं पंख ढीले हो जाते हैं नाक से पानी निकलता है तथा 10—20 चूजे मर जाते हैं। वयस्क मुर्गियों भी फफूंदी रोग से प्रभावित होती है जिसके कारण सांस की बीमारी हो सकती है। छीकना मुँह खोलकर सांस लेना अण्डा उत्पादन कम हो जाना तथा नाक से पानी आना मुख्य लक्षण है। 5—10 प्रतिशत मुर्गियों मर जाती है।

उपचार : प्रभावित मुर्गियों को एक ग्राम नीला थोथा (कॉपर सल्फेट) 2 लीटर पानी में मिलाकर एक दिन के अंतराल पर 3—5 बार देना चाहिए। जैव सुरक्षा की दृष्टि से प्रयोग होने वाली बिछावन व अन्य उपकरण को फार्मलिन के द्वारा उपचारित करना चाहिए।



कृषि विज्ञान केन्द्र, हरनौत, (नालंदा)

बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, मागलपुर

